"राष्ट्रीय एकता में खेलों का योगदान"

यह दुर्भाग्यपूर्ण है परन्तु कटु सत्य है कि वर्तमान भारतवर्ष में खेलकूद की गतिविधियों को समाज में एवं शैक्षणिक परिवेश में यथोचित स्थान या सम्मान प्राप्त नहीं है जो पूर्व में था ।

यह और भी दुर्भाग्यपूर्ण है कि अगर हम खेल कूद की बात करते है तो सिर्फ मैड़ल जीतने या हार जीत के संदर्भ से जो कि एक बहुत संकीर्ण दृष्टिकोण है ।

इतिहास साक्षी है कि शारीरिक गतिविधियां (खेल कूद) हमारे समाज में बहुत महत्वपूर्ण थी । गुरूकुल में बच्चों को गणित, दर्शन शास्त्र, खगोलशास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, वेद पुराण इत्यादि पढ़ाने के साथ कुश्ती, तैराकी धर्नुविघा मुष्टी युद्ध, गदा युद्ध तलवार बाजी, भाला फेंक, घुड़सवारी इत्यादि भी सिखाया जाता था ।

राजा जनक और राजा द्रोपद ने अपनी पुत्रियों सीता जी और द्रोपदी जी के स्वयंवर की शर्ते शारीरिक कौशल्य से संबंधित ही रखी थी वे चाहते तो गणित का सूत्र हल करने, श्रेष्ठ कविता लिखने, श्रेष्ठ चित्र बनाने शास्त्रात में जीतने की शर्ते भी रख सकते थे ।

खेलकूद की गतिविधियों को इसलिये महत्व दिया गया था या दिया जाना चाहिये क्योंकि इससे अनेकों शारीरिक, मानसिक सामाजिक एवं आध्यामिक लाभ है । खेलकूद में भागीदारी संपूर्ण व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

भारत वर्ष एक महान राष्ट्र है और इस महानता को कायम रखने के लिये एकता एक बहुत ही महत्वपूर्ण है ।

खेलकूद गतिविधियों के साथ दल (टीम) शब्द बहुत ही घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है । दल इंगित करता है कि व्यक्तियों के समूह को जिसके सदस्य एक साथ मिलकर किसी एक कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिये विभिन्न दायित्वों/कार्यों का निर्वाहन करते हुये श्रेष्ठ प्रदर्शन करते हैं और सफलता प्राप्त करने का प्रयास करते है । इस संपूर्ण प्रकिया में पूर्ण एकता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि एकता क्या है ? मेरे विचार से संभवतः :–

1– विचारों का सामंजस्य ।
2– सर्वहित में प्रयासों का सामंजस्य ।
3– अच्छाईयों और कमजोरियों के बावजुद भी एक दूसरे के साथ रहना ।
4– सफलता और असफलता को स्वीकार करना ।
5– एकदूसरे का यथोचित मान सम्मान करना ।
6– श्रम (कार्यों) का क्षमता के अनुसार विभाजन और योगदान की सराहना ।
7– राष्ट्र के प्रति मान, सम्मान, वफादारी, सर्मपण ।
8– नेतृत्व और अनुसरण यथानुसार स्वीकार करते हुये अपनी भूमिका का पूर्ण दायित्व के साथ निर्वाहन करना ।
9– एक दूसरे के धर्म, भाषा, भोजन, पहनावे और रितीरिवाजों का सम्मान ।

निरन्तर–2

विचारों की एकता से ज्यादा महत्वपूर्ण है प्रदर्शित/अभिव्यक्त एकता ।

हम जानते है कि भारतवर्ष की विशेषता विविधता में एकता ही रही है और इसका हम सब को गर्व भी है । भारत वर्ष की एकता को बनाने और बनाये रखने में पूर्व में उल्लेखित कारकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है और यह मानना है कि खेलकूद राष्ट्रिय एकता के लिये उल्लेखित कारकों को प्राप्त करने में पूर्णतः सक्षम है

खेलकूद (शारीरिक कियायें) मनुष्य की नैसर्गिक आवश्यकता है और हर कोई खेलना चाहता है । अतः उचित होगा हम इस सशक्त माध्यम (खेलकूद) का उपयोग राष्ट्रिय एकता को विकसित करने और मजबूत बनाने के लिये करें ।

अब मैं संक्षिप्त में यह समझाने का प्रयास करूंगा कि खेलकूद के माध्यम से कैसे प्रत्येक कारक को विकसित किया जा सकता है ।

1– विचारों का सामंजस्य :– विचारों के मतभेद के बावजूद भी हमारा अंततः एक मत होना आवश्यक है । हमारी असहमति सहमत होने के लिए होना चाहिये , यह एकता के लिये आवश्यक है । खेल में लगातार ऐसी परिस्थितयां निर्मित होती है जब खेल रणनीति, खेल के तरीके, खिलाड़ियों के चयन, खेल मैदानों की तैयारी, खेल उपकरण इत्यादि पर मतभेद होते है। परंतु अंत में अच्छे खेल के लिये, जीतने के लिये, सब एक मत होकर पूर्ण प्रयास करते है ।

2– सर्वहित में प्रयासों का सामंजस्य :– खेलों में भाग लेने से सर्वहित की भावना विकसित होती है चाहे वो अभ्यास का समय हो या प्रतियोगिता का । खेल से जूडे हुये समस्त व्यक्ति यह प्रयास करते है कि अच्छे प्रदर्शन के लिये जो भी किया जाये वह सब के हित के लिये हो जिससे अच्छा प्रदर्शन उभर कर सामने आये । खेल में सब चाहते हैं कि हर तरह से सबका हित हो ।

3– अच्छाईयों और कमजोरियों के बावजुद भी एक दूसरे के साथ रहना :– खेल चाहे किसी भी स्तर का हो उसके दल के प्रत्येक खिलाडी के कुछ मजबूत और कुछ कमजोर पहलू होते हैं जिसके बारे में सबको ज्ञान होता है । खेल दल के सदस्यों का प्रयास यह होता है कि अपने साथियों की कमजोरी को दूर करने या उसको ढ़ाकते हुये खेले और प्रत्येक खिलाड़ी की क्षमताओं का भरपूर उपयोग करते हुये अपने दल को सफलता की ओर लेकर चलें ।

4– सफलता और असफलता को स्वीकार करना :– वह दल कभी भी सफल नहीं होता जो जीत या हार की जिम्मेदारी किसी एक खिलाड़ी पर डालता है, प्रशिक्षक या प्रबंधन पर डालता है । जीत या हार की जिम्मेदारी सब की होती है यह खेल भावना को दर्शाता है और टीम के मनोबल को कायम रखने के लिये भी अति आवश्यक है । इससे दल के सदस्यों में अहंकार और हीन भावना नहीं पैदा होती है ।

निरन्तर–3

5– एकदूसरे का यथोचित मान सम्मान करना :– एक दल की संरचना में कप्तान, उपकप्तान, वरिप्ठ, जूनियर खिलाडी, मैनेजर, कोच, ट्रेनर, फिजियोथेरेपिस्ट इत्यादि आते हैं जिनकी खेल प्रदर्शन में अपनी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है । अतः किसी को कम न आंकते हुए यथानुसार मान सम्मान देने की परंपरा को प्रोत्साहित करना आवश्यक है अन्यथा खिलाड़ी स्वयं का मान –सम्मान खो देता है ।

6– श्रम (कार्यों) का क्षमता के अनुसार विभाजन और योगदान की सराहना :– समाज में श्रम का विभाजन प्रगति, विकास के लिये अति आवश्यक है । खेल से जुडे हुये प्रत्येक व्यक्ति की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसे नकारा नहीं जा सकता है । जब सब अपना यथोचित योगदान देते है तब जाकर ही दल का अच्छा प्रदर्शन संभव होता है ।

अगर हम किसी खेल दल के साथ जुडे तो महसूस होगा कि मेनेजर, कोच , कप्तान, उपकप्तान वरिप्ठ एवं जूनियर खिलाड़ी ट्रेनर फिजियोथेरेपिस्ट, ग्राउंड मेन इत्यादि बडी लगन से अपने निश्चित कार्यों का आपसी सामंजस्य के साथ पूर्ण करते हुये अच्छे प्रदर्शन के लिये प्रयासरत रहते है।

7– राप्ट्र के प्रति मान, सम्मान, वफादारी, सर्मपण :– खिलाड़ियों का अपने खेल, अपनी संस्था (जिसके लिये वह खेल रहा है) के प्रति बहुत ज्यादा सम्मान, वफादारी और समर्पण होता है या खेलते हुये धीरे धीरे उसके अंदर यह स्वतः ही विकसित हो जाती हैं और ऐसे खिलाड़ियों में बहुत मजबुत एकता एकजुटता होती है जिससे वे सफलता प्राप्त करते हैं ।

8– नेतृत्व और अनुसरण यथानुसार स्वीकार करते हुये अपनी भूमिका का पूर्ण दायित्व के साथ निर्वाहन करना :– प्रत्येक मनुप्य समय समय पर विभिन्न परिस्थितियों में इन दो भूमिकाओं का निर्वाहन सफलता के लिये करता है । कभी वह नेतृत्व करता है और कभी अनुसरण । यह आवश्यक है कि हम इन दोनों भूमिकाओं का निर्वाहन ईमानदारी से करना सीखें जिससे व्यक्तिगत और सामूहिक सफलता प्राप्त हो । इन दोनों गुणों का भरपूर विकास खेल के माध्यम से होता है । एक समय में एक खेल दल पर एक कप्तान होता है और बाकी अनुसरणकर्ता होते है और धीरे धीरे यह अनुसरणकर्ता परिपक्व होते हुए अपने में नेतृत्व के गुणों को विकसित करते हुये नेतृत्व संभालते है, नेतृत्व उसी व्यक्ति का सफल होता है जो अच्छा अनुसरणकर्ता रहा हो । एकता और प्रगति के लिये यह आवश्यक है – प्रगति के लिये भी यह आवश्यक है । खेल में दल को सफलता या श्रेप्ठ प्रदर्शन तभी प्राप्त होता है जब दल का प्रत्येक सदस्य अपनी भूमिका पूर्ण दायित्व के साथ निभाता है और आवश्यकता पड़ने पर एक दूसरों के दायित्वों के निर्वाहन में यथासंभव मदद करता है । हॉकी में आकमक, मध्य एवं रक्षा पंक्ती के खिलाडियों की अपनी अपनी भूमिका होती है परंतु आवश्यकता पड़ने पर प्रदर्शन के लिये आपसी समझ और तालमेल से भूमिकाओं को बदल सकते हैं जो कि दल के लिये लाभकारी होती है ।

निरन्तर–4

5– खेल के माध्यम से दल के खिलाड़ियों को एक दूसरे के धर्म, भाषा, भोजन, पहनावे और रिति रिवाजों की जानकारी प्राप्त होती है, उनको समझने का अवसर प्राप्त होता है ।

9– एक दूसरे के धर्म, भाषा, भोजन, पहनावे और रितिरिवाजों का सम्मानः– एक खेल दल पर विभिन्न धर्मों, भाषाओं, पहनावे, खान–पान और रितिरिवाजों के खिलाडी होते है । खिलाड़ी खेलने के लिये विभिन्न राज्यों और देशों में जाते है जहां उन्हें जयह विविधताएं समझने का और उनका आदर करने का अवसर प्राप्त होता है । अक्सर मैच से पहले सफलता के लिये विभिन्न धार्मिक स्थलों पर एक साथ जाना और सर्वधर्म प्रार्थना को दल प्रबंधन द्धारा एकजुटता और खेल भावना और मनोबल विकसित करने के लिये प्रोत्साहित किया जाता है ।

10– यह निश्चित है कि अगर हम नियमित खेलेंगे तो धीरे–धीरे हमारे व्यक्तित्व में वह सारे गुण अपने आप विकसित हो जायेंगे जो न सिर्फ राष्ट्रिय एकता के लिये आवश्यक है परन्तु अच्छे जिम्मेदार स्वस्थ नागरिक बनने के लिये भी आवश्यक है ।

अन्ततः खेल न सिर्फ राष्ट्रिय एकता को विकसित और – मजबूत करेगा अपितु राष्ट्रिय अखंडता को भी बनाये रखेगा ।

यह निश्चित है कि अगर आज भारत नहीं खेलेगा तो कल भारत हर तरह से कमजोर होगा ।

"हम खेलता भारत महान भारत" के नारे का मर्म समझे और सुनिश्चित करें कि सर्वहित में भारत वर्ष के प्रत्येक नागरिक को खेलने का अवसर मिले यह उसका मौलिक अधिकार होना चाहिये ।

"जय हिन्द"

संस्थापक अध्यक्ष
डॉ.एम.आय.कुरैशी
निदेशक शारीरिक शिक्षा
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर.

Play India Play
Playindiaplay.org.